Continuation of Approaches of organizing different pedagogical subjects

प्रक्रिया उपागम

संरचना उपागम

मानवतावादी उपागम

विभिन्न शैक्षणिक विषयों के आयोजन के उपागम (APPROACHES OF ORGANIZING DIFFERENT PEDAGOGICAL SUBJECTS)

शैक्षणिक विषयों के आयोजन के उपागम

प्रक्रिया उपागम-प्रक्रिया उपागम उन प्रक्रियाओं पर बल देता है जो शिक्षार्थी द्वारा किसी विषय की संरचना की खोज में सहायक होते हैं। इस उपागम की मान्यता है कि किसी विषय क्षेत्र का ज्ञान तर्कसम्मत ढंग से सोचा और संगठित किया जा सकता है। शिक्षार्थी ज्ञान की इस संरचना की खोज करने में सक्षम है यदि वह खोज या जाँच के द्वारा अन्वेषण करे। इस प्रकार प्रत्येक प्रक्रिया का साधन-मूल्य होता है। प्रक्रियाएँ ज्ञान के साधन तथा पाठ्यचर्या के अन्तिम उद्देश्य के रूप में होती है।

विज्ञान में प्रक्रिया उपागम को उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। इस उपागम में निहित मान्यता विज्ञान की संकल्पना से ही सम्बन्धित है। प्रक्रिया उपागम के अनुसार विज्ञान उन क्रियाओं का समुच्चय है। यह विज्ञान के विषयवस्तु पक्ष को महत्व न देकर वैज्ञानिक ज्ञान की वैधता तथा उत्पादन की प्रक्रिया पर बल देता है। ये प्रक्रियाएँ मुख्य रूप से सूचनाओं के संग्रह तथा उपयोग से सम्बन्धित होती है।

प्रक्रिया उपागम के उदाहरणस्वरूप निम्न प्रक्रियाओं पर ध्यान दें

प्रेक्षण करना

अनुमान लगाना

व्याख्या करना

परिकल्पना का निर्माण

वर्गीकरण करना

मापन

भविष्य कथन करना

संक्रियात्मक परिभाषाप्रयोग करना

चरों का नियन्त्रण

इन्हें देखकर स्पष्ट है कि ये सभी प्रक्रियाएँ विज्ञान की प्रत्येक शाखा में समाहित हैं। समय के साथ इनमें परिवर्तन नहीं होता।

. **संरचना उपागम** की मान्यता है कि प्रत्येक शास्त्र की एक आधारभूत संरचना होती है। यह संरचना इसके विषयवस्तु के संगठन तथा इसके विभिन्न घटकों के बीच पारस्परिक सम्बन्ध के रूप में देखी जा सकती है। विद्यार्थी इस संरचना को भलीभाँति समझकर इसकी विषयवस्तु तथा उसके घटकों को सरलतापूर्वक समझ लेता है। अतः पाठ्यचर्या में शास्त्र की संरचना प्रतिबिम्बित होनी चाहिए। इससे विद्यार्थियों में नई सूझबूझ विकसित होगी जिन्हें वे अपनी भाषा में व्यक्त कर सकेंगे। संरचना उपागम न्यूनतम अनिवार्यताओं की ओर संकेत करता है। ये शास्त्र की संरचना से व्युत्पादित होते हैं तथा इनके अन्तर्गत संकल्पनाएँ, कौशल, नियम तथा सिद्धान्त सम्मिलित होते हैं। साथ ही संरचना के महत्वपूर्ण होने के कारण विभिन्न कक्षाओं के किसी विषय की पाठ्यचर्या पहले से ही निर्मित की जा सकती है।

विषय के ज्ञान पर अधिकार कर लेना ही अधिक महत्वपूर्ण है। विद्यार्थी के बारे में ज्ञान का महत्व सीमित है। तीसरी बात यह कि संरचना आधारित पाठ्यचर्या में परिवर्तन तभी होता है जब विषयवस्तु में परिवर्तन अथवा पुनर्गठन किया जाता है। ऐसी पाठ्यचर्या में विषयवस्तु तथा अधिगम निष्पत्ति ही शिक्षण विधियों का निर्धारण करते हैं, अधिगम के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का अधिक महत्व नहीं होता।

अन्तिम बात यह है कि विषयवस्तु का संगठन शास्त्र की संरचना के तर्क द्वारा निर्धारित होता. है न कि अन्य विचारों द्वारा अध्यापक का मुख्य कार्य संरचना तथा उसके तर्काधार को बल प्रदान करना है। इस उपागम में अध्यापक तथा अधिगम दोनों ही औपचारिक तथा सूक्ष्म रूप ग्रहण कर लेते हैं।

संरचना उपागम हमें इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देने में सहायक होता है जैसे विषयवस्तु के किन पक्षों पर अधिक बल देना चाहिए इन्हें किस क्रम से पढ़ाना चाहिए तथा तथ्य का प्रस्तुतीकरण कैसे किया जाना चाहिए। संरचना उपागम का उपयोग भाषा, गणित, विज्ञान तथा सामाजिक ज्ञान के अध्यापन में अधिक लाभदायी होता है क्योंकि ये विषय सभी कक्षाओं में सामान्य शिक्षा के रूप में पढ़ाए जाते हैं तथा इन्हें भविष्य में विशेष अध्ययन के लिये भी प्रायः चुना जाता है। 1960-80 के मध्य विद्यालय पाठ्यचर्या अधिकतर संरचना उपागम पर ही आधारित थी। भारत में आज भी इस उपागम का अधिकाधिक उपयोग होता है।

1. **मानवतावादी उपागम** –यह उपागम किसी विषय क्षेत्र में सीखी गई संरचना, विषयवस्तु, संकल्पनाओं तथा सिद्धान्तों के व्यवहार या उपयोग से सम्बन्धित है।

इसकी मान्यता है कि अधिगम तथा अध्यापन का मुख्य उद्देश्य है विद्यार्थियों के द्वारा अपने ज्ञान को नवीन स्थितियों में उपयोग करना। इसप्रकार शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य है ज्ञात सन्दर्भों को अज्ञात स्थितियों में स्थान्तरित करना। स्थानान्तरण मूलतः कौशल तथा प्रक्रियाओं का होता है अतः मानवतावादी उपागम विद्यार्थी में अभिप्रेरणा की सहायता से ज्ञान प्राप्त करने तथा इसका प्रयोग करने पर बल देता है। ज्ञान के प्रयोग से पहले उसे अर्जित करना आवश्यक है। बूनर (1960) ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'दि प्रासेस ऑफ एजूकेशन में इस उपागम की जोरदार सिफारिश की है। बूनर का विश्वास है कि विद्यार्थी की रुचि की सहायता से अधिगम के लिए उसे बेहतर ढंग से प्रेरित किया जा सकता है। धीरे-धीरे अधिगम स्वतः ही आनन्ददायक प्रक्रिया बन जाती है। इस उपागम को 'मानवतावादी' कहते हैं क्योंकि यह अधिगम के मानवीय पक्षों पर बल देता है (जैसे विद्यार्थी की अभिरुचि, आवश्यकता अभिप्रेरणा, निरन्तर प्रयास आदि) ।

यद्यपि ऐसा करते समय विषयवस्तु के विविध क्षेत्रों की संरचना, सिद्धान्तों तथा उनके बीच परस्पर सम्बन्धों के महत्व को कम करके नहीं देखा जा सकता। यह विद्यार्थियों को अपनी अभिरुचियों को समझने इन्हें विकसित करने तथा विकल्पों के चयन और उच्च अध्ययन में सहायक होता है। शास्त्र की संरचना तथा विद्यार्थी की सुनिश्चित अभिरुचियाँ तथा आवश्यकता ही उसके भविष्य में अध्ययन की जाने वालीविषयवस्तु का निर्धारण करते हैं।